Date
24/04/2020

Subject - लिंग, विद्यालय और स्कूल
(Ch - 5 →)
Topic -- Violence
(हिंसा) एवं हिंसा रोकने वाली संस्थाए

B.Ed. 2nd Year
Period - 4 th

हिंसा का शाब्दिक अर्थ :)
meaning of violence :- (कष्ट देना, पीड़ा देना)

हिंसा से तात्पर्य प्रत्येक उस क्रिया से है जो किसी भी व्यक्ति को शारीरिक या मानसिक क्षति पहुँचाने के अभिप्राय से की जाती है।

अतः किसी भी व्यक्ति को तन, मन, कर्म और वाणी से क्षति पहुंचाना हिंसा कहलाती है।

जैसे - मारपीट करना, कटु शब्द कहना, हत्या करना, बलात्कार करना इत्यादि।

हिंसा की परिभाषा

डा० एस० के० दुबे के अनुसार — "हिंसा शक्ति के दुरूपयोग की वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति या समूह के द्वारा दूसरे व्यक्ति या समूह को शारीरिक एवं मानसिक रूप से हानि पहुँचायी जाती है और इसे एक समाज - विरोधी कार्य एवं अवांछनीय व्यवहार के रूप मे माना जाता है।"

→ P.T.O.

Scanned with CamScanner

(2) हिंसा के कार्य :-

(1) हिंसा विनाश का वातावरण तैयार करती है।
(2) हिंसा जीवन का विनाश करती है।
(3) हिंसा के कारण धन की हानि होती है।
(4) हिंसा सामाजिक असन्तुलन उत्पन्न करती है।
(5) हिंसा के कारण मानसिक अशान्ति का अनुभव होता है।
(6) हिंसात्मक गतिविधियों से पर्यावरणीय असन्तुलन उत्पन्न होता है।
(7) हिंसात्मक गतिविधियां भेदभाव की स्थिति उत्पन्न करती है।
(8) हिंसात्मक गतिविधियों की दो देशों के मध्य युद्ध में भी प्रथम भूमिका होती है।
(9) हिंसा असन्तोष का वातावरण उत्पन्न करती है।
(10) हिंसा के कारण रचनात्मकता की समाप्ति हो जाती है।

हिंसा के प्रकार

हिंसा के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित है-

(1) मौखिक हिंसा → मौखिक हिंसा के रूप - अपमानित करना, धमकी देना, गाली देना।

(2) मनोवैज्ञानिक हिंसा → दबाव डालकर किसी कार्य को कराना, या कपटपूर्ण ढंग से व्यक्ति को मानसिक आघात पहुंचाना।

(3) शारीरिक हिंसा → शारीरिक चोट पहुंचाना, हत्या कर देना, शारीरिक कष्ट देना, धक्का देना, चाकू मारना इत्यादि।

(4) दांचागत हिंसा → आयु के आधार पर, जातीय एवं साम्प्रदायी आधार पर पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना।

(5) लोकप्रिय संस्कृति में अश्लीलता → अश्लील नृत्य, वस्त्र व प्रेम सम्बन्धों द्वारा संस्कृति को क्षति पहुंचाना।

Scanned with CamScanner

→ हिंसा रोकने वाली संस्थाएं :-

किसी एक व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे अथवा अन्य व्यक्ति को सुव्यवस्थित तथा सुविचारित रूप से जीव यातना देने वाले व्यक्ति के उद्देश्य की पूर्ति पीड़ित व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध हो वह हिंसा कहलाती है।
परन्तु इस प्रकार की हिंसा को रोकने में कुछ संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कुछ महत्वपूर्ण संस्थाएं :- हिंसा रोकने वाली कुछ महत्वपूर्ण संस्थाएं निम्नलिखित है।

1. परिवार 2. विद्यालय 3. कार्यस्थल 4. मीडिया

1. परिवार की भूमिका

सर्वप्रथम बालक का समाजीकरण परिवार से ही शुरू होता है। बालक के चरित्र पर परिवार के अन्य सदस्यो के व्यवहार का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः बालक के उपयुक्त विकास के लिए परिवार को निम्न तथ्यो पर ध्यान देना आवश्यक है।

1.] परिवार के सदस्य आपस में सहयोग पूर्ण व्यवहार करें।
2.] बालक को उपेक्षित न करें समझने की कोशिश करें।
3.] घर के सदस्यो का व्यवहार ऐसा हो कि बालक का मार्गदर्शन कर सके।
4.] किसी भी समस्या का समाधान परिवार के सदस्य मिलकर करें।
5.] बालक के व्यवहार मे हिंसा की प्रवृति का आभास होते ही निदान करें।

Continue---

Malti Singh
29/04/2020

Scanned with CamScanner